अध्याय—1

अध्याय–1

शोध विषय का परिचय

(1.1) प्रस्तावना :–

प्रत्येक व्यक्ति की प्राकृतिक, सामाजिक, दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ उसके लिये वांक्षित मूल्यों का निर्धारण करती हैं। व्यक्ति के मूल्य इस बात का दर्पण है कि वह अपनी सीमित शक्ति एवं समय में क्या–क्या करना चाहता है? जीवन के पथ प्रदर्शन के रूप में मूल्य अनुभवों के साथ परिपक्व होते जाते हैं और व्यक्ति के व्यवहार में परिलक्षित होते हैं। मनुष्य अनुभवों को अपने वातावरण से समायोजन कर अपने स्वयं के व्यक्तित्व में चिन्हित गुणों के माध्यम से अर्जित करता है। उसका जीवन वातावरण से प्रभावित होता रहता हैं व्यक्ति की आंतरिक शक्तियाँ वातावरण की बाह्य शक्तियों के संपर्क में आती है। फिर इन शक्तियों के मध्य संतुलन स्थापित होता है। इसी संतुलन का परिणाम समायोजन होता है और यही समायोजन व्यक्तित्व, गुण और नैतिक मूल्यों का सृजन करता है।

यदि समायोजन क्षमता होते हुए भी व्यक्ति के आचरण व मूल्यों में विसंगतियाँ पाई जाती है तो उस व्यक्ति को समाज लक्ष्यहीन मानता है अर्थात नैतिक मूल्यों एवं समायोजन दोनों ही मानव समाज के लिए आवश्यक है। जहाँ समायोजन अपनी समस्याओं और तनावों से मुक्ति हेतु किया गया मानव प्रयास है वहीं नैतिक मूल्य एक व्यक्ति के गुण व्यवहार प्रतिमान और विशेषताओं का उल्लेख करते हैं।

जीवन मूल्य एवं समायोजन क्षमता दोनों ही बालक का मानसिक योग्यता पर निर्भर करते हैं। ऐसा माना जाता है कि जिस बालक की मानसिक योग्यता का स्तर जितना अच्छा है वह उतना ही जीवन मूल्यों से परिपूर्ण होगा उसकी उत्कृष्ट समायोजन क्षमता होती है, साथ ही उसका विकास भी अच्छी तरह होता है। शिक्षा छात्रों में सुसमायोजन एवं नैतिक मूल्यों का विकास करती है साथ ही

मानसिक योग्यता भी शिक्षा के द्वारा विकसित होती है। यही मानसिक योग्यता मनुष्य के संपूर्ण जीवन व्यवहार की दिशा निर्धारित करती है।

नवीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षा को बाल केन्द्रित तथा शिक्षा के लक्ष्य को विकासोन्मुखी बनाया गया है। बालक की मानसिक दक्षता समायोजन क्षमता, नैतिक मूल्य निर्धारण में अभिरूचि विकसित करने के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाएँ संचालित की जाती है।

विद्यार्थियों के मूल्य निर्धारण व समायोजन क्षमता के विकास के लिए ही पाठ्यक्रम के साथ विद्यालयों में समाज से जुड़े समाज सेवी संगठनों व उनकी क्रियाओं को पाठ्य सहगामी क्रिया के रूप में संचालित किया जाता है। वर्तमान में विद्याार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए एन.सी.सी. एवं एन.एस.एस. आदि कार्यक्रमों व गतिविधियों का आयोजन विद्यालयों में किया जाता है। विद्यार्थी स्व रूचि व स्व प्रेरणा से इनका चयन करते हैं एवं इनमें प्रतिभाग करते हैं।

(1.2) राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) :–

एन.सी.सी. सबसे पहले जर्मनी में 1966 में शुरू किया गया। भारत सरकार ने 1946 में पं. हृदयनाथ कुंजरू की अध्यक्षता में राष्ट्रीय कैडेट कोर के संचालन के लिए रक्षा मंत्रालय में राष्ट्रीय कैडेट कोर के निदेशालय की स्थापना सन् 1948 में की गयी और कर्नल के पद के सैनिक अधिकारी को उसका निर्देशक नियुक्त किया गया। एन.सी.सी. के प्रशिक्षण को और अधिक व्यापक बनाने हेतु 1963 से विद्यालय के स्वस्थ छात्रों के लिए एन.सी.सी. का प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया गया। क्योंकि एन.सी.सी. तथा एन.सी.सी. रायफल्स के कैडेटों में ड्रेस, भत्ता, प्रशिक्षण, कंपनी में कैडटों की संख्या आदि में काफी अंतर था। अतः दोनों में एकरूपता लाने के लिए 2 अप्रैल सन् 1964 को एन.सी.सी. रायफल्स का एन.सी.सी. में विलय कर दिया गया तथा छात्रों को प्रशिक्षण की अनिवार्यता समाप्त कर दी गयी। वर्ष 1997 में इसके पाठ्यक्रम में खेलकूद एवं स्पोर्ट्स को भी सम्मिलत कर लिया गया है। इसके लिए एन.सी.सी. के द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिवर्ष 7

अगस्त से 15 अगस्त के बीच स्वतंत्रता दिवस कैम्प का आयोजन दिल्ली में किया जाता है।

(1.3) राष्ट्रीय कैडेट कोर के उद्देश्य :–

राष्ट्रीय कैडेट कोर का युवा राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण स्थान है। राष्ट्रीय कैडेट कोर के उद्देश्य निम्न है :–

(1) युवकों के चरित्र, साहस, मैत्री, अनुशासन, नेतृत्व धर्म निरपेक्षता का दृष्टिकोण, क्रीड़ा कौशल के प्रति उत्साह तथा निःस्वार्थ सेवा का आदर्श जैसे गुणों का विकास करना ताकि वे भारत का हित करें और देशभक्त नागरिक बने।

(2) सशस्त्र सेना तथा जीवन के हर क्षेत्र में नेतृत्व देने और देश सेवा के लिए सदा तत्पर रहने वाले युवकों में एक संगठित और प्रेरित जनशक्ति का संचार करना।

(1.4) राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) :–

राष्ट्रीय सेवा योजना भारत सरकार के शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रवर्तित समाज सेवा कार्यक्रम है। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से व्यक्ति समाज के साथ मिल–जुल कर समाज चेतना का भाव जागृत करता है।

अधिकांश सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों, स्कूलों में एन.एस. एस. इकाईयों के स्वयं सेवक हैं और निजी संस्थानों में एन.एस.एस. स्वयं सेवकों को योजना के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। एक इकाई आम तौर पर 20–40 विद्यार्थियों को शामिल करती है, एवं वे क्षेत्रीय समन्वयक को रिपोर्ट देते हैं जो स्कूल या कॉलेज से एक जिम्मेदार पार्टी को आंतरिक रूप से प्रतिबंधित करती है। अधिकांश संस्थानों में एन.एस.एस. स्वयं सेवकों के लिए कोई अलग वर्दी नहीं है।

(1.5) राष्ट्रीय सेवा योजना के लक्ष्य व उद्देश्य :—

राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य छात्रों की सामाजिक चेतना को जागृत करना तथा उन्हें निम्नलिखित कार्यों के लिए अवसर उपलब्ध करना है :—

(1) व्यक्तियों के साथ मिलकर कार्य, सेवा तथा श्रम भाव जागृत करना।

(2) स्वयं को सृजनात्मक और रचनात्मक सामाजिक कार्यों में प्रवृत्त करना।

(3) स्वयं तथा समुदाय की ज्ञान वृद्धि करना।

(4) समस्याओं को कुछ न कुछ हल करने में स्वयं की प्रतिभा का व्यवहारिक उपयोग करना।

(5) शिक्षित तथा अशिक्षितों के बीच की दूरी को मिटाना।

(1.6) राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों के लिए आचरण संहिता निम्न प्रकार है:—

(1) सभी राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक कार्यक्रम अधिकारी द्वारा नियत किये गये दल नायक में मार्गदर्शन में कार्य करेंगे।

(2) दल समुदाय के नेतृत्व के लिए वे सहयोग और विश्वास के पात्र बनेंगे।

(3) उन्हें प्रत्येक स्थिति में आलोचनात्मक कार्यकलापों से दूर रहना होगा।

(4) प्रत्येक स्वयं सेवक को राष्ट्रीय सेवा योजना से संबंधित कार्य करते समय राष्ट्रीय सेवा योजना का बैच धारण करना आवश्यक है।

(1.7) राष्ट्रीय सेवा योजना की अवधि :—

राष्ट्रीय सेवा योजना में पंजीकृत एक विद्यार्थी से एक शैक्षणिक वर्ष में 120 घण्टे का समाज सेवा कार्य अपेक्षित है और दो वर्ष की अवधि में अर्थात 240

घण्टे का समाज सेवा कार्य पूरा करने पर उसे विद्यालय से प्रमाण–पत्र पाने की पात्रता होगी।

एन.सी.सी. के प्रशिक्षण के छात्रों में समाज सेवा मिल–जुल कर कार्य करने की भावना, नेतृत्व, अनुशासन तथा आत्म विश्वास का विकास होता हैं चूंकि एन. सी.सी. के प्रशिक्षण हेतु विभिन्न शिविरों को विभिन्न स्थानों पर आयोजित किये जाते हैं अतः छात्रों को महत्वपूर्ण ऐतिहासिक औद्योगिक तथा सामाजिक केन्द्रो का भ्रमण करने का अवसर प्राप्त होता है, जिसके कारण उसका ज्ञान बढ़ता है और उनमें रचनात्मक कार्य करने की लगन उत्पन्न होती है।

(1.8) अध्ययन की आवश्यकता :–

वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति ने जहाँ एक और अनेक भौतिक सुविधाएँ प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर इसके कारण व्यक्ति के जीवन में तनाव–दुश्चिंताएं बढ़ गई है। जीवन की गति इतनी तीव्र हो गई है कि व्यक्ति पग–पग पर कठिनाईयों का अनुभव करता है। आज से कुछ दशक पूर्व अपने से बड़ों का आदर करना, उन्हें उचित प्रेम देना कर्तव्य माना जाता था। लेकिन आज के युवाओं का रूष्ट और रूखा व्यवहार बड़ों के प्रति अनादर, मनमानी यह सब दर्शाता है युवाओं में नैतिक मूल्यों का स्तर किस हद तक गिर चुका है। छोटी सी उम्र में ही युवा वह सब कुछ करना चाहते हैं, वह सब कुछ पाना चाहते हैं जो न ही उनके लिये उचित है और न ही उसका अभी वक्त आया है। न जाने कितने ऐसे उदाहरण है जो रोज अखबारों में छपते हैं और हमारे आस–पास घटित होते हैं, जो दर्शातें हैं कि युवा किस हद तक खुद को भुला चुके हैं, और सबसे ज्यादा तकलीफ तो इस बात की होती है कि उन्हें न तो इसकी भनक है और न ही इसका अफसोस।

सामाजिक परिवर्तन भी इतनी तीव्र गति से होने लगा है कि परंपरागत सामाजिक मूल्यों का व्यक्ति के जीवन में स्थान सूना हो रहा है, और वह नित्य नए जीवन मूल्यों की तलाश कर रहा है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन निश्चित मानव मूल्यों को धारण किए रहता है। यही मूल्य उसकी समायोजन क्षमता को

बनाए रखने में सहायक होते हैं, जिसके कारण व्यक्ति समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को निरंतर बखूबी ढंग से निभाता है। अतः समायोजन क्षमता व नैतिक मूल्यों का समावेश विद्यार्थियों में परम आवश्यक है। इसी कारण समायोजन क्षमता एवं नैतिक मूल्यों के विकास हेतु विद्यालय में कई गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, इन्हीं में से एन.सी.सी. व एन.एस.एस. प्रमुख है। क्या एन.सी.सी. व एन.एस.एस. के द्वारा छात्रों के नैतिक मूल्यों का पोषण हो रहा है ? क्या इन गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता अन्य सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न है ? इन्ही प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने हेतु शोधकर्ती ने एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों व सामान्य विद्यार्थियों का समायोजन क्षमता व नैतिक मूल्य के सन्दर्भ में अध्ययन करने का निर्णय लिया।

(1.9) समस्या का कथन :–

"उच्चतर माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों एवं सामान्य विद्यार्थियों का समायोजन क्षमता व नैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन"।

(1.1.0) अध्ययन के उद्देश्य :–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का अध्ययन करना।
2. एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों तथा सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
4. एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों तथा सामान्य विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(1.1.1) अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है।

2. एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों तथा सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

4. एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों तथा सामान्य विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

(1.1.2) तकनीकी शब्दों की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण

समायोजन क्षमता :–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह अन्त समय तक समाज में ही रहना चाहता है। वह उसी समय तक अधिक प्रसन्न दिखाई देता है, जबकि वह स्वयं की रूचि, पसंद और अभिवृत्तियों वाले समूह को प्राप्त कर लेता है। इस व्यवहारिक गतिशीलता का ही नाम समायोजन है। व्यक्ति अपने विकास में ऐसी परिस्थितियों का सामना करता है, जो उसकी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक होती हैं। जब व्यक्ति अपने व्यवहार की गतिशीलता का प्रयोग आवश्यकताओं की पूर्ति और आत्म–पुष्टि के लिए करता है। तो इसे समायोजन की प्रक्रिया कहा जाता है।

हर जीव अपने पर्यावरण से तालमेल एवं सामंजस्य बनाने की कोशिश करता है यह उसके निजी हित में होता ही है अपनी प्रजाति के अन्य सदस्यों तथा पर्यावरण जन्य चुनौतियों से स्वाभाविक संम्बन्ध कायम करने की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है मनुष्य को इस पूरी सृष्टि का मुकुट या सिरमौर सभवतः उसको अपने पर्यावरण से तालमेल बनाये रखने की क्षमता के कारण ही कहा जाता है। उसका पर्यावरण प्रायः तीन प्रकार का माना जा सकता है। प्रथम भौतिक पर्यावरण जिससे तालमेल रखे बगैर वह जीवित नहीं रह सकता। द्वितीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण जिसमें वह अपने तथा दूसरों के बीच की दूरी को कम करता है। तृतीय मनौवैज्ञानिक पर्यावरण जिससे वह अलग नहीं रह सकता और जो उसके आन्तरिक दुनिया के रूप में उसे सोचने, कल्पना की

उड़ान भरने तथा समय एवं स्थान की सीमाओं को तोड़कर एक दूर अपरिचित संदर्भ में रिश्ता जोड़ने में उसे कामयाबी दिलाता है। मनुष्य का अपने इस प्रकार के पर्यावरण से सम्बन्ध बनाये रखने, उसके साथ संतुलन कायम करने तथा उसकी चुनौतियों से कुशल एवं सफल समन्वय तथा समझौता की स्थिति तक पहुंचने वाली निरंतर प्रक्रिया को समायोजन कहा जाता है।

समायोजन की प्रकिया को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने हेतु आगे दिये गये चित्र का उपयोग किया जा सकता है।

समायोजन प्रक्रिया की सात अवस्थाऐं :–

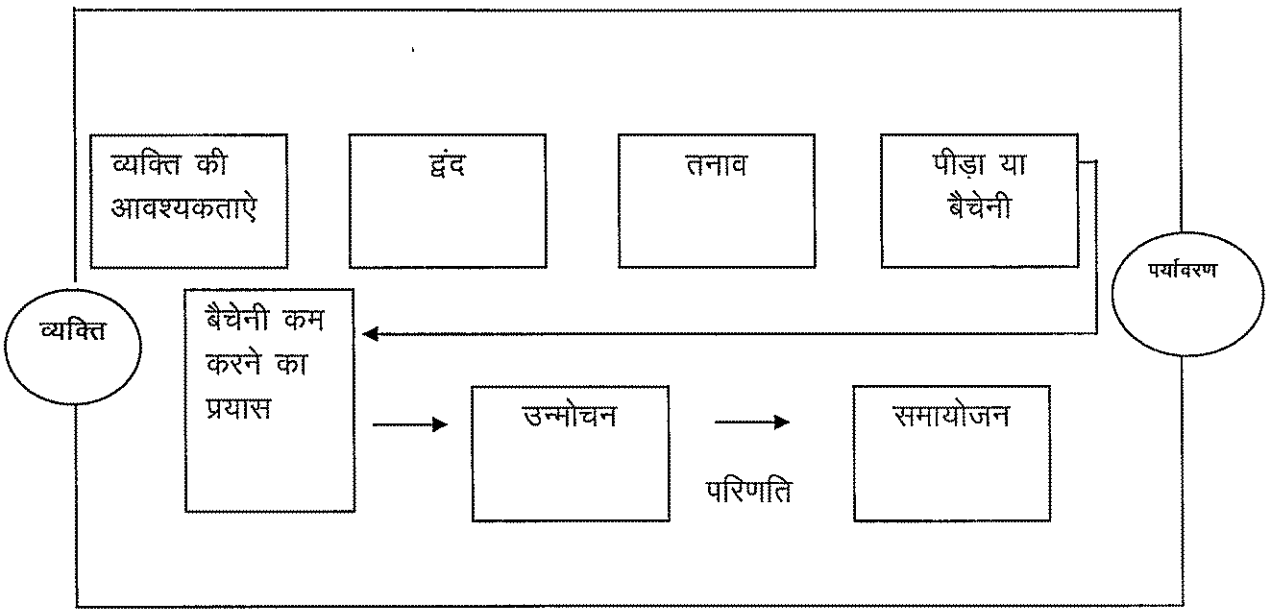

बोरिंग, लैंगफेल्ड "समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित, सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।"

प्रस्तुत लघु शोध में समायोजन से तात्पर्य है कि समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी, अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को

प्रभावित करने वाले परिस्थिति में संतुलन रखता है। समायोजन के निम्नलिखित चार पक्ष है :–

- गृह समायोजन
- स्वास्थ्य समायोजन
- सामाजिक समायोजन
- संवेगात्मक समायोजन

नैतिक मूल्य :–

मूल्य वह है जिनको व्यक्ति देख सकते है। चूंकि यह व्यक्ति के विचारों, इच्दाओं व व्यवहार में परिलक्षित होते है, अर्थात् व्यक्ति के मूल्य ही उसे हर स्थान पर दिशा निर्देशित करते है जबकि आदर्शात्मक मूल्य वह है जिन्हें व्यक्ति चाहता है या जिनकी ओर अपने व्यवहार को उन्मुख करता है। वल्यूकॉन ने कहा है कि "मूल्य प्रेरणाओं के विशिष्ट पहलु है जो कि मानवीकृत संस्कृति की झलक देते है ये एकाएक किसी परिस्थिति या आवश्यकताओं की संतुष्टि के आधार पर प्राप्त नहीं किये जा सकते है। मूल्य सदैव शाब्दिक एवं प्रेरक व्यवहारों में दृष्टिगोचर होते है तथा व्यक्ति को क्या करना चाहिये या क्या नहीं करना चाहिये का ज्ञान कराते हैं।"

फ्लिंक के अनुसार 'मूल्य मानव रूपी मापदंड है जिनके अनुसार मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया कलापों में से चयन करने में प्रभावित होते हैं।"

कल्क महान (1961) के अनुसार :– 'मूल्य वह है जिसका व्यक्तित्व के विकास में विशेष महत्व होता है जिसको पाने की व्यक्ति चेष्टा करता है। इस प्रकार मूल्य मानव इच्छा को पूर्ण करता है वे जीवन के रक्षक और विकास के सहायक होते हैं वे आत्म साक्षात्कार एवं आत्म विकास की ओर ले जाते है।"

नैतिक मूल्य बालक के व्यक्तित्व को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है जिस बालक में उच्च नैतिक मूल्य होते है वह अधिक सुरक्षित, अधिक साहसी, अधिक आत्मविश्वासपूर्ण और अधिक समायोजित होता है। इस प्रकार के बालक आकर्षक व्यक्तितत्व रखते है। प्रस्तुत लघु शोध में मूल्यों के अंतर्गत चार निम्नलिखित नैतिक मूल्यों को रखा गया है ।

- ईमानदारी (Honesty)
- लगनशीलता (Sincerety)
- मानवता (Humanity)
- भद्रता (Courtesy)

एन.सी.सी. कैड्टसः–

कक्षा–11 वीं के ऐसे विद्यार्थी जो एन.सी.सी. कार्यक्रम में नामांकित हैं तथा कम से कम एक कैम्प में प्रतिभाग कर चुके हों।

एन.एस.एस. स्वयं सेवक :–

कक्षा 11 वीं के वे विद्यार्थी जो एन.एस.एस. के सक्रिय प्रतिभागी हैं तथा कम से कम एक एन.एस.एस. कैम्प में प्रतिभाग कर चुके हों।

(1.1.3) अध्ययन का सीमांकन :–

- अध्ययन में केवल भोपाल शहर के विद्यालयों को चुना गया।
- न्यादर्श का चयन केवल तीन विद्यालयों से किया गया।
- केवल उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को चुना गया।

•••••••